चित्रण कला में नारी रूपांकन

डॉ० अर्चना जोशी
व्याख्याता, ड्राइंग एवं पेंटिंग विभाग
राजकीय महाविद्यालय, राजस्थान

Reference to this paper should be made as follows:

डॉ० अर्चना जोशी,
चित्रण कला में नारी रूपांकन,
Artistic Narration 2017,
Vol. VIII, No.2, pp 106- 109
http://anubooks.com/
?page_id=485

सारांश

नारी का 'सौन्दर्य प्रतिमान' के रूप में स्थापित होना सर्वविदित है। विश्व की कोई शैली या विधा नारी रूपाकारों के अंकन से अछूती नहीं रही, चाहे मूर्त रूपाकार हो या अमूर्त। भारत और यूरोप के अधिकांश कलाकारों का प्रेरणा स्रोत एवं अभिव्यक्ति योग्य विशय 'नारी देह' रहा है। प्रत्येक काल एवं वाद में नारी रूपाकारों को प्रबलता से अभिव्यक्ति मिली है, परन्तु भारतीय कला में इसका रूप भाव प्रवण और श्रद्धा स्वरूप रहा, जबकि यूरोपीय चित्रों में इसे भौतिक, तकनीक तथा वैचारिक परिवर्तन के साथ अधिक देखा जा सकता है। भारतीय कला में नारी सौन्दर्य की प्रतिछाया है। भारतीय दर्शन में नारी तथा प्रकृति समष्टी के संचरण में परस्पर गुथे हुए हैं। यहाँ नारी को द्य प्रकृति का रूप माना गया है, जिसके अस्तित्व के बिना सृश्टि का न तो अस्तित्व सम्भव है और न ही उसका संचरण। वस्तुतः नारी ही दृश्य कलाओं की मुख्य विषय वस्तु रही है।

व्यापक रूप में नारी सिर्फ एक दैवीय सौन्दर्य या कलाकार की कल्पना न होकर एक सृजनकर्ता है। सन्तानोत्पत्ती उसका विशेष अधिकार है और मातष्त्व उसका सहज गुण। नारी के इस विशेष गुण को आदिकाल से कलाकारों ने अपनी कृतियों में संजोकर उसके मातृत्व को सदा के लिए अमरता प्रदान कर दी। भारतीय दर्शन की एक अन्य अवधारणा के अनुसार सृष्टि के निर्माता पालक और संहारक ब्रह्मा, विष्णु, शिव अपनी शक्तियों (सरस्वती, लक्ष्मी और पार्वती) के बिना अपने कर्तव्यों का पालन नहीं कर सकते। सरस्वती, लक्ष्मी और पार्वती क्रमशः विद्या, सौभाग्य, सम्पन्नता तथा पवित्रता की देवी हैं और भारतीय कला में महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं।

fl Ukqkfl ;kausdka; çfrekeasukjh lkSn;ZdsNjgjsu dkfu: fir fd;k rks"kka vkS lkrokgu dkyhu vtark dsfp=dkjkausukjh vk—fr;kadksmUur mjkst rFkk ekalay furaCkkadej eairyscy] ukfHk i{k ds lehi rfud eksM+ yrk nsmlsvkS vf/kd lkSn;Z;hcuk Mkyk A vtark dk ukjh lkSn;Z mlds ekrRo i{k dksvf/kd mtkxj djrk gSA ;gk¡ dsxQkfp=kaesftu dkfuekZk f}rh; "krkCnh bZ ki woZ lsbZ dh lkroha lnh rd] vFkkZ 900 lkyka rd gksrk jgk] esaukjh lkSn;Z,oa ml dh fofo/k Hkko Hkfxekvka dks lo;Z's B çn"kZu n{kk t k l drk gSA fo}kukadsvuql kj vtUrk dsfp= fo"o dsfdlh Hkh dky dsfp=kadh rqyuk esavf}rh; gSaD,kafd ;gk¡ Hkkoç/kku lkSn;Z dk lEekfur : i eaçfrf'Br fd;k x;k gSA ;gk¡ ukjh dsfofo/k : i &ek] nsoh] jkuh] nklh vkfn dk vadu gqvk gSA u dsoy vtUrk vfirq vU; ckS) dsUnz tSlsmFkkjk] lkaph] Hkjgr esaHkh ukjh dsfofo/kLo: ikadk vadu mruh gh fofo/krk] pk rk vkS ifo=rk dsl kFk gqvk A

nsoh vkSekr`"kfä ds: i eaukjh dsvR;f/kd fp=.k dsi"pkr~Hkkjrh; dyk eas f{kkh, d ,slk ik= gSt ksmruk ghegRoiwkZ gSvkS cgqrk; r lsç;ä gqvk gSA xqIr dkyhu nhnkjxat dh of{kkh bl l aHkZ esal cl s lqUnj mnkgj.k gSA

[kt qjkgks¼10&12 oha"krh½dsefUnjkaesaukjh lkSn;Z dsfofo/k: ikadksvfHkO;fä feyh gSA ;gk¡ ukjh fp=.k esaml dsfofHkUu Hkko] "kfä vkS lkSn;Z dh lt xrk dk ckgqY; çnf"kZr gSA ogha tS u "kSyh esaukjh fp=.k vukS[kslkSn;Z dh çLrfr nsrk gSftlsukVdh; rk vkS çkFkfed jaxkadsç;ksx lscuk;k x;k gSA rRi"pkr~egqy] jktLFkkuh vkS igkM+h "kSyh dsfp=kaesaukjh vk—fr dsdiMkaesa>huki u] fo"kskoL= foU;kl vkS euHkkou lquaj jaxkals ml svukS[kk lkSn;Z çnku fd;k x;k A ;gk¡ ukjh dsu;ukavkS ng;f'V dh eqæk lEiwkZ jl kadk çn"kZu djusesai;kZr yxrh gSA 16 oha vkS 17 oha lnh dsdykdkjkausus ukf;dk&Lo: i dkscgqk;r lsfp=r fd;k A çfl) dkO;kaeaFkk xhr xksfoUn] fcgkjh lr bZ vkfn dh fo'k; oLrq ysdj —".k&jk/kk dksuk;d&ukf;dk ds: i esafp=r fd;k gSA ckjgekl k vkS jkxekyk fp= J`a[kyk vka usukjh dsfofHkUu euksHkkoksadksyko.;e; h: i eaçLrq fd;k gSA

le; dsifjorZu usukjh dsfp=.k esavfHkO;fä dsLo: i dkscny fn;kA vaxzst "kkfxy] jfoUæukFk VSxkj vkfn dh fp=kfHkO;fä dsQyLo: i Hkkjrh; fp="kSyh vk/kqfud rk dh rjQ çLFkku djrh

है, परन्तु यहाँ भी नारी स्वरूपों की अभिव्यक्ति कलाकार से विलग न हो सकी। रविन्द्रनाथ टैगोर की सरलीकृत नारी आकृतियाँ इसका उदाहरण हैं। अमष्ता शेरगिल ने 'हिल वूमेन', 'बाजार जाते हुए', 'वधु का श्रृंगार', 'मदर इंडिया' एवं 'सूरज मुखी' आदि की रचना कर नारी के वास्तविक स्वरूप को प्रदर्शित और किया। राजा रवि वर्मा ने 'लेडी विथ मिरर', माद्री, गेलेक्सी, 'ए ग्रुप ऑफ इंडियन वूमेन' तथा भारतीय री धार्मिक ग्रंथों रामायण, महाभारत, संस्कृत और प्राचीन ग्रंथों की नायिकाओं को चित्रित कर आदर्श आज्ञाकारी पुत्री तथा गहनों से लदी हुई गृहणी आदि स्त्री आकृतियाँ सृजित कीं। समसामयिक आंदोलनों से प्रभावित नन्दलाल बोस और विनोद ने बिहारी मुखर्जी, अवनीन्द्रनाथ ठाकुर, अन्य चित्रकारों ने भी नारी आकृति चित्रण के लिए अपनी तुलिकाएँ चलाई।

के.के. हेब्बर, एम.एफ. हुसैन, एन.एस. बेन्द्रे, सरोजपाल गोगी, अंजली ईला मेनन, ही जतिनदास, एफ. एन. सूजा, बैकुन्ठम आदि ने नारीचित्रण द्वारा नारी की समसामयिक स्थिति का परिदृश्य प्रस्तुत किया। एम.एफ. हुसैन के विभिन्न देवियों और अभिनेत्रियों के शबीह चित्र नारी के सशक्ती तथा सुदृढ़ रूप को परिलक्षित करते हैं। इस संदर्भ में पाश्चात्य जगत की कृतियों पर दृष्टिपात करें तो पुनर्जागरण काल और उसके पश्चात् रची गई कला में नारी रूपों की बहुतायतता देखी जा सकती है, जो हर तरह के माध्यम और धरातल पर अभिव्यक्त हुई है, जिनके विषय दीर्घकालिक इतिहास, पौराणिक कथाएँ, वास्तविक, नैतिक और भौतिक जीवन सभी कुछ रहे। इस संदर्भ में यदि प्राचीन श्रेष्ठ चित्रकारों का उल्लेख करें तो बर्नर्ट वनर्ली, पीअर फ्रांसिस्को मोला, पाओलोडिमाटिस और अब्राहम ब्लोमार्ट, विरजिअल सोलीस, जेन साडिलर, हैडरिक गोल्टजियम की कृतियाँ प्रमुख रूप से इंगित की जा सकती हैं। इसके अतिरिक्त उत्तर क्षेत्रीय महारथी एल्बर्ट ड्यूरर की कृति 'औरत और बच्चा' उल्लेखनीय है। प्रभाववादी चित्रकार मोने की कृति ओलम्पिया रेनेसा काल से 19 वीं सदी के मध्य नारी रूपांकन के संदर्भ में क्रांतिकारी कृति मानी गई। यह तेलचित्र यथार्थवादी निर्वस्त्र चित्रण था, जो अब तक पाश्चात्य यूरोप में निषिद्ध था। इस चित्र में मुख्य पात्र नारी को निर्वस्त्र आधे लेटे हुए और पास में एक दासी को खड़े नौर हुए बनाया गया था। चित्र में छाया प्रकाश की दर्श व्यवस्था इस प्रकार की गई कि मुख्य पात्र सम्पूर्ण दि प्रकाश में है तथा दासी का मुख अंधकार में।

इस संदर्भ में द्वितीय कृति प्रतीकात्मकवादी 'द नोद श्री ब्राइड्स' 19वीं सदी से 20वीं शती पूर्व कला आंदोलन को दर्शाती है। यह कृति जेन टूरूप नाम के डच कलाकार की है, जो काले चाक और पेंसिल से निर्मित है। इस चित्र में चित्रित सभी नारी आकृतियों के शेष शरीर को यथार्थवादी चित्रण से दूर रखा गया। परियों के बाल और शरीर घुमावदार बनाए गए।

घनवाद के प्रतिनिधि चित्रकार पिकासो की कृति 'गर्ल बिफोर ए मिरर' नारी अंकन के प्रस्तुतीकरण की तरफ अगले पायदान पर ले जाती है, जो न यथार्थवादी है, न प्रतीकात्मक नारी अंकन । यह संयोजन निजस्व के साथ प्रस्तुतीकरण है। पिकासो की इस कृति के पश्चात् डेकूनिंग की कृतियों में नारी चित्रण इतना अमूर्तवादी हो जाता है कि विषय को कठिनाई से पहचाना जा सकता है।

इस प्रकार पाश्चात्य यूरोप में रेनेसा से आज तक की समय सीमा में नारी रूपांकन के प्रस्तुतीकरण में जबरदस्त परिवर्तन देखे गए हैं। यह पाश्चात्य कला में एक कला आन्दोलन से दूसरे कला आंदोलन द्वारा कला में महिला रूपांकन का आधिक्य के साथ प्रस्तुतीकरण को दर्शाता है।

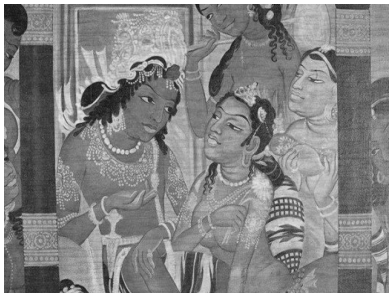

अजंता गुफाओं में चित्रित नारी आकृतियां

अमृता शेरगिल की कृति

राजा रवि वर्मा की कृति

एम एफ हुसैन की कृति

पिकासो की कृति

अल्बर्ट ड्यूरर की कृति